International Journal of Academic Research and Development
ISSN: 2455-4197, Impact Factor: RJIF 5.22
www.academicsjournal.com
Volume 2; Issue 4; July 2017; Page No. 747-748

पाश्चात्य समाजवाद की अभिकल्पना : फेबियन समाजवाद एंव उदारवाद

अखिलेश त्रिपाठी

राजनीति विज्ञान विभाग, इलाहाबाद विश्वविद्यालय, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, भारत।

प्रस्तावना

1884 में फेबियन सोसाइटी की सांगठनिक संरचना के साथ ब्रिटेन में फेबियन समाजवाद का सूत्रापात हुआ। फेबियन समाजवाद की मौलिक मान्यता है कि क्रान्तिकारी हिंसात्मक कार्यक्रम भद्दा एवं अमानवीय है।१

फेबियन समाजवाद व्यवस्था परिवर्तन के लिए संवैधानिक साधनों का पक्षपोषण करता है। फेबियन समाजवादी राजनीतिक संस्थाओं की भूमिका को प्रभावकारी बनाना चाहता हैं तथा इन संस्थाओं का पूर्ण उपयोग करना चाहता है इस सन्दर्भ में वह मताधिकार को व्यापक बनाना चाहता है। इस क्रम में वह समाजवाद के विचारों से ओत–प्रोत उम्मीदवारों को सफल बनाना चाहता है तथा इसके माध्यम से ऐसी विधियों का निर्माण करना चाहता हैं जिससे समाजवादी नीतियों को क्रियान्वित किया जा सके। पीज की धारणा है कि फेबियन सोसाइटी समाजवादी मत के प्रचार–प्रसार तथा उसके प्रति लोगों में आकर्षण पैदा करने का प्रयास करता है। इसके लिए वह स्त्री–पुरुष समानता का प्रबल पक्ष–पोषण करता है। फेबियन समाजवादी महिला पुरुष की समता पर आधारित नागरिकता का हिमायती है तथा साथ ही महिलाओं को मताधिकार प्रदत्त करने में विश्वास करता है।२

फेबियन समाजवाद समाज में परिव्याप्त भूमि तथा अन्यान्य पूंजी पर व्यक्तिगत स्वामित्व का अवसान कर सामाजिक स्वामित्व की अधिस्थापना करना चाहता है। फेबियन समाजवादी वर्गगत स्वामित्व को भी सार्वजनिक स्वामित्व में विलीन करना चाहता है। फेबियन समाजवाद राष्ट्रहित में भूमि तथा अन्य पूंजी का राष्ट्रीयकरण करना चाहता है। इस प्रकार फेबियन सोसाइटी ''समाजवादी प्रजातंत्रा'' की प्रतिस्थापना करना चाहता है। फेबियन समाज में जहाँ उत्पादन तथा वितरण, विनिमय तथा उपभोग की समस्त वस्तुओं का राष्ट्रीयकरण करना चाहता है तभी राष्ट्र, व्यक्ति से श्रेष्ठकर होगा। फेबियन विचारकों की मान्यता है कि मूल्य का प्रणयन समाज के द्वारा होता है न कि श्रमिक अथवा वर्ग विशेष के द्वारा। अतः वितरण भी सामाजिक होना चाहिए। धन का उपयोग समाज कल्याण के लिए होना चाहिए न कि किसी व्यक्ति विशेष अथवा वर्ग एवं समूह के लिए।३

फेबियन समाजवादियों का श्रेय–प्रेय पाथेय है समस्त व्यवस्था पूर्णतया लोकतांत्रिक हो। फेबियन समाजवाद सत्ता के विकेन्द्रीकरण का पक्षपोषण करता है। इसकी मान्यता है कि उद्योगों की सांगठनिक संरचना एवं संचालन लोकतांत्रिक एवं विकेन्द्रित होनी चाहिए जिसमें शासन जनता के प्रति पूर्णरूपेण उत्तरदायी हो। परिणामस्वरूप फेबियन समाजवादी स्थानीय स्वशासन का अनुसमर्थन करते हैं। फेबियन समाजवादी समाज की प्रगति की उत्प्रेरणा शक्ति को नहीं प्रत्युत विवेक सम्मत विश्वास तथा सामाजिक न्याय को प्राप्त करने की नैतिक भावना द्वारा उत्प्रेरित शक्ति को मानता है। ४

फेबियन समाजवाद समय के प्रवाह के साथ अपने परिवर्तित स्वरूप में उदार समाजवाद के रूप में सामने आया। दूसरे शब्दों में यह कहना असंगत न होगा कि उदार समाजवाद, फेबियन–समाजवाद का परिवर्तित स्वरूप है। उदार समाजवादी विचारक विकासवादी सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं। उदार समाजवादी समाजवाद को व्यवहारिक क्षेत्रा में क्रियान्वित करने के लिए वैधानिक साधनों का प्रयोग करके वर्तमान व्यवस्था में परिवर्तन लाना चाहते हैं। परिवर्तन के निमित्त उदार समाजवादी, समाजवादी नीतियों का जनता में व्यापक स्तर पर निवेश कर उसके प्रति आकर्षण पैदा करना चाहते हैं पुनः जनमत द्वारा संसद एवं विधान सभाओं पर शनैः–शनैः अधिकारों की प्रतिस्थापना करना चाहते हैं। सत्ता के सूत्राधार बन जाने के पश्चात् अपने उद्देश्य की प्राप्ति में किसी प्रकार की कठिनाई नहीं होगी तथा इसके साथ ही उदार समाजवाद के विचार को प्रचार–प्रसार के माध्यम से आगे बढ़ाया जायेगा। तथा शनैः–शनैः आर्थिक क्षेत्रा में राष्ट्रीय हस्तक्षेप में गुणात्मक वृद्धि की जायेगी।५ इस प्रकार उदार समाजवादी वर्तमान व्यवस्था में शीघ्रतापूर्वक मौलिक परिवर्तन करने में विश्वास नहीं रखते प्रत्युत् उदार समाजवादी विचारकों का अभिमत है कि समाजवादी व्यवस्था में परिवर्तन मन्थर गति से होगा तथा प्रत्येक परिवर्तन पूर्व की सामाजिक व्यवस्था की प्रणाली के अनुसार निर्धारित होगा। परिणामस्वरूप वर्तमान परिस्थितियों को दृष्टिपथ में रखकर भविष्य के आन्दोलन की दिशा व गति का निर्धारण होना चाहिए अथवा निरूपण होना चाहिए। वर्तमान की राजव्यवस्था (समाजवादी राजव्यवस्था) से यह अपेक्षा की जाती है कि वह समाजवाद की प्रतिस्थापना ही नहीं करेगा प्रत्युत् प्रतिस्थापना के बाद वह समाजवादियों के आदर्शों के अनुसार सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्राों का संचालन भी करेगा।६ उदार समाजवादियों के अनुसार राष्ट्र के स्वरूप के सम्बन्ध में जो विचार सामने आते हैं उनके सम्बन्ध में आलोचकों का विचार है कि उदार समाजवादी राष्ट्र के कार्यों का चरम सीमा तक केन्द्रीकरण कर देगें। लेकिन यह पूर्णतया सत्य नहीं है। उदार समाजवाद सदैव स्थानीय सरकार के क्षेत्रा को विस्तृत करने का लक्ष्य सामने रखते हैं। जार्ज बर्नाड शा ने 1889 ई0 में लिखा था कि ''एक लोकतांत्रिक राष्ट्र समाजवादी राष्ट्र तब तक नहीं हो सकता जब तक कि वह जनसंख्या के प्रत्येक क्षेत्रा में केन्द्रीय सरकार के समान ही लोकतांत्रिक स्थानीय स्वशासन संघ की स्थापना नहीं कर देते।''७

उदार समाजवादियों के कार्यक्रम एवं प्रणाली के विश्लेषण से निम्नलिखित तत्व दृष्टिगोचर होते हैं। इंग्लैण्ड में लेबर पार्टी की नीतियां और उसके कार्यक्रम इन तत्वों पर प्रकाश डालने में सहायक हो सकती हैं। इनमें चार लक्ष्य महत्वपूर्ण है–

1. एक राष्ट्रव्यापी न्यूनतम मजदूरी देना।
2. राजस्व में क्रान्ति या राजस्व में क्रान्तिकारी परिवर्तन।

3. उद्योगों में लोकतंत्रावादी अधिकार।
4. सम्पत्ति को समाज के कल्याणकारी कार्यों में लगाना।

प्रत्येक राष्ट्र का यह कर्तव्य होना चाहिए कि प्रत्येक नागरिक को कम से कम इतनी आय निश्चित रूप से प्राप्त हो जिससे उसकी शारीरिक, मानसिक और आध्यात्मिक उन्नति में कोई बाधा न पड़े।८ यह उन्नति के लिए ''समान अवसर सिद्धान्त'' का ही रूपान्तरण है। उदार समाजवादी राज्य के समस्त बड़े उद्योगों का राष्ट्रीकरण करेगा। जिन व्यक्तियों के स्वामित्व से इन्हें प्राप्त किया जाएगा। उन्हें उचित क्षतिपूर्ति सरकार की ओर से प्रदत्त की जायेगी। इसके अतिरिक्त सरकार द्वारा ऐसी शिक्षा प्रणाली का परिनिर्माण किया जायेगा जिसमें सामाजिक व आर्थिक दशा को ध्यान में रखे बिना बौद्धिक उन्नति के समान अवसर प्रदान किये जायेंगे। उदार समाजवादियों ने प्रथम विश्व युद्ध के पश्चात् नीतिगत प्रस्ताव रखा था कि आयकर को बढ़ाया जाय, आयकर के साथ सुपर टैक्स में वृद्धि की जाय। इसके साथ ही उदार समाजवादियों ने नये कर के रूप में पूंजीकर का अनुसमर्थन किया। मूल प्रश्न यह है कि इन प्रस्तावों का सैद्धान्तिक आधार क्या है? इसका अभिप्राय यह है कि उदार समाजवादी अतिरिक्तार्थ के सिद्धान्त में विश्वास रखते हैं। यह वैग्नर के सामाजिक एवं राजनीतिक सिद्धान्तों का क्रियात्मक रूप है।९ उदार समाजवादी भूमि के लगान और खानों से प्राप्त आय को बेकार सम्पत्ति की संज्ञा से अभिहित करते हैं, क्योंकि यह अब तक पूंजीपति वर्ग का साधन रही है और अब इसे राष्ट्रीय कल्याणकारी कार्यों में लगायेगा।१० इस प्रकार उदार समाजवाद का आदर्श प्रमुख व्यवसायों का राष्ट्रीकरण करना है तथा पूंजीपतियों के यहां पड़ी बेकार परिसम्पत्तियों को सरकार अपने आधिपत्य में लेकर उसको राष्ट्र के कल्याणकारी कार्यों के लिए प्रयुक्त करेगी। उदार समाजवाद के इस सिद्धान्त तथा प्रणाली को विश्व के सभी प्रजातांत्रिाक देशों ने आधुनिक युग में स्वीकार किया है।११

संदर्भ ग्रन्थ

1. रीडिंग इन रीसेन्ट पोलिटिकल फिलास्फी :जी0 बी0 शा ,सम्पादक –एम0 स्मार्क, लन्दन, 1920 पृष्ठ संख्या 436
2. हिस्ट्री आफ फेबियन सोसाइटी : एडवर्ड आर0 पीज, लन्दन, 1920ए पृष्ठ संख्या 1920।
3. रिसेन्ट पोलिटिकल थाट : एफ0 डब्लू0 कोकर, एपलीएनशन सेन्चुरी, न्यू यार्क 1964ए पृष्ठ संख्या 105।
4. माडर्न पोलिटिकल थियरी : सी0 एम0 जोड, आक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस लन्दन, 1958
5. सिण्डीकेलिज्म इन फ्रान्स : एल0 लेनिन, द्वितीय संस्करण यूनिवर्सिटी प्रेस लन्दन, 1953ए पृष्ठ संख्या 125।
6. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 126.127।
7. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 135।
8. गिल्ड सोशलिज्म : जी0 डी0 एच0 कोल रिस्टेटेड पब्लिशर्स लन्दन, 1920ए पृष्ठ संख्या 41।
9. उपर्युक्त, पृष्ठ संख्या 42।
10. समाजवादः डॉ0 सम्पूर्णानन्द, भारतीय ज्ञान पीठ, वाराणसी, पंचम संस्करण, संवत 2002ए पृष्ठ संख्या 295।
11. गिल्ड सोशलिज्मः जी0 डी0 एच0 कोल, पृष्ठ संख्या 183. 187।